Yog/ योग

जब दो या दो से अधिक ग्रह दो या दो से अधिक भावों पर एक विशेष परिस्थिति में अपना प्रभाव डालते हैं या आपस में संबंध स्थापित करते हैं तो ऐसी अवस्था को योग कहते हैं। सामान्यता योग शुभ या अशुभ होते हैं पर कुछ योग ऐसे भी हैं जो दोनो प्रकार के फल देते हैं। शुभ ग्रहों और शुभ भावों से जो योग बनते हैं वे सुख और शांति देते हैं। इसके विपरीत अशुभ ग्रहों और अशुभ भावों से जो योग बनते हैं वे योग दुख और अशांति को बढ़ाते हैं। कुछ शुभ और अशुभ योगों के नाम निम्न प्रकार से हैं:–

शुभ योग:– सुनाफा योग, अनाफा योग, दुरधरा योग, गज केसरी योग, लग्न और चन्द्रमा से बनने वाले अमलयोग, गरूड़ योग, वेसि योग, वासि या वोसि योग, उभयचरी योग, बुधआदित्य योग, लग्नाधि योग, रूचक या रूचिक योग, भद्र योग, हंस योग, मालव्य योग, सस या ससा योग, केदार योग, विपरीत राज योग, शुभकर्त्री योग, वरिष्ठ योग, वसुमान योग, लक्ष्मीयोग, शुभमाला योग, गौरी योग आदि।

आपकी जन्म पत्रिका का अध्ययन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि आपकी जन्म पत्रिका में कितने शुभ योग हैं। जितने अधिक शुभ योग होंगे, जीवन में सुख और शांति भी उतनी ही होगी पर इस बात का ध्यान रहे कि शुभ योग भंग (रद्द) न हो रहे हों। क्योंकि नीच ग्रह, अस्तग्रह, वक्री ग्रह आदि, शुभ योगों को भंग करके उनकी शुभता को कम या न के बराबर कर देते हैं। कुछ अशुभ योगों के नाम इस प्रकार हैं:–

अशुभ योग:– केमद्रुम योग, चन्द्रमंगल योग, पापाधियोग, राजयोग भंग (रद्द), पापकर्त्री योग, शकट योग, अधम योग, सम योग, अशुभ माला योग आदि।

कई बार अशुभ योग भी शुभ ग्रहों के संपर्क में आकर अपनी अशुभता कम या न के बराबर कर देते हैं। वैदिक ज्योतिष शास्त्र में अनेकों प्रकार के योगों को बताया गया है। उनमे से कुछ योगों के नाम और वे किस प्रकार आपकी जन्म पत्रिका में बनते हैं वे इस प्रकार से हैं।

सूर्य से बनने वाले योग, निम्न प्रकार से हैं। (1) वेसि योग– सूर्य से दूसरे भाव में राहु, केतु और चन्द्रमा को छोड़कर कोई भी ग्रह हो तो वेसि योग बनता है । **(2) वासि योग या वोसी योग–** सूर्य से बारहवें भाव में राहु, केतु और चन्द्रमा को छोड़कर यदि कोई ग्रह हो तो वासि योग बनता है । **(3) उभयचारी योग–** जब सूर्य से दूसरे और बारहवें भाव में राहु, केतु और चन्द्रमा को छोड़कर कोई भी ग्रह हो तो उसे उभयचारी योग कहते हैं। **(4) बुध आदित्य योग–** जब जन्म पत्रिका में सूर्य और बुध एक ही भाव में बैठे हों तो बुध आदित्य योग बनता है।

चन्द्रमा से बनने वाले योग– (1) सुनाफा योगः– यदि चन्द्रमा से दूसरे भाव में सूर्य, राहु और केतु को छोड़कर कोई ग्रह हो तो उसे सुनाफा योग कहते हैं। **(2) अनाफा योग–** यदि जन्म पत्रिका में चन्द्रमा से बारहवें भाव में सूर्य, राहु और केतु को छोड़कर कोई भी ग्रह हो तो उसे अनाफा योग कहते हैं। **(3) दुरधरा योग–** चन्द्रमा से बारहवें और दूसरे स्थान पर सूर्य, राहु और केतु को छोड़कर कोई भी ग्रह हो तो दुरधरा योग बनता है। **(4) केमद्रुम योगः–** यदि आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्रमा से दूसरे और बारहवें भाव में कोई भी ग्रह न हो तो इसे केमद्रुम योग कहते हैं। **(5) गज केसरी योगः–** जब जन्म लग्न या चन्द्रमा से वृहस्पति केन्द्र में हो तो गजकेसरी योग बनता है। **(6) चन्द्र मंगल योग–** जब आपकी जन्म पत्रिका में किसी भी भाव में चन्द्रमा और मंगल एक साथ बैठे हों या चन्द्रमा और मंगल आपस में दृष्टि संबंध स्थापित कर लें तो आपकी कुण्डली में चन्द्र मंगल योग है। **(7) चन्द्राधि योग–** चन्द्रमा से यदि कोई भी शुभ ग्रह (वृहस्पति, शुक्र या बुध) 6,7 और 8 भाव में हो तो इसको चन्द्राधि योग कहते हैं और अशुभ ग्रह हो तो **पापाधियोग** कहते हैं। **(8) अमल योग–** यदि आपकी जन्म पत्रिका में चन्द्रमा से दसवें भाव में कोई भी शुभ ग्रह (वृहस्पति, शुक्र या बुध) हो तो आपकी जन्मपत्रिका में अमल योग है। **(9) गरूड**

योगः— यदि चन्द्रमा के नवांश का राशि अधिपत्ति (स्वामी) उच्च का हो तो गरूड योग बनता है। कुछ ज्योतिषियों का मत है कि व्यक्ति का जन्म, दिन के समय हुआ हो और उस समय चन्द्रमा शुक्ल पक्ष का हो तो भी गरूड़ योग बनता है।

मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ये पाँचों ग्रह अलग–अलग पाँच प्रकार के योग बनाते हैंः— यदि आपकी जन्म पत्रिका में पाँचों योग बन जाएं तो चक्रवर्ती सम्राट, चार योग बन जाएं तो महाराजा, तीन योग बन जाएं तो राजा या शासक, दो योग बन जाएं तो महाभाग्यशाली, और एक योग बन जाए तो भाग्यशाली समझना चाहिए। पाँचों योगों के नाम और पहचान इस प्रकार है। लग्न से यदि मंगल केन्द्र में अपनी राशि या उच्च राशि का हो तो **रूचिका या रूचक योग** बनता है, बुध लग्न से केन्द्र में अपनी राशि या उच्च राशि का हो तो **भद्रा योग** बनता है, वृहस्पति लग्न से केन्द्र में अपनी राशि या उच्च का हो तो **हंसा योग** बनता है, शुक्र लग्न से केन्द्र में अपनी राशि में या उच्च का हो तो **मालव्य योग** बनता है, शनि लग्न से केन्द्र में अपनी राशि या उच्च का हो तो **ससा या सस योग** बनता है।

आपकी जन्म पत्रिका के लग्न से बनने वाले योग (1) लग्नाधि योग– यदि जन्म पत्रिका में लग्न से 6, 7 और 8 भावों में शुभ ग्रह हो तो लग्नाधि योग बनता है। **(2) अमल योग (लग्न से)** — लग्न से दसवें भाव में शुभ ग्रह हो तो अमल योग बनता है। **(3) राजयोगः—** केन्द्र और त्रिकोण के स्वामी आपस में किसी भी प्रकार संबंध स्थापित कर लें तो राजयोग बनता है। यह एक अतिमहत्वपूर्ण और शुभ योग है। ग्रहों और भावों में संबंध जितना ज्यादा और मजबूत होगा राजयोग भी उतना ही मजबूत और फल दायक होगा जैसे– किसी ग्रह का केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी होकर केन्द्र में या त्रिकोण में बैठना, केन्द्र का स्वामी होकर त्रिकोण में बैठना, त्रिकोण का स्वामी होकर केन्द्र में बैठना, केन्द्र के स्वामी त्रिकोण में और त्रिकोण के स्वामी केन्द्र में हों, या केन्द्र और त्रिकोण के स्वामी कुण्डली में एक साथ बैठे हों या आपस में केवल दृष्टि संबंध स्थापित कर लें तो भी राज योग बनता है।

मेरा मानना यह है कि राजयोग केन्द्र और त्रिकोण के स्वामी ग्रहों के आपस में संबंध स्थापित करने के कारण बनता है और केन्द्र को भगवान विष्णु और त्रिकोण को देवी

लक्ष्मी के रूप में भी देखा जाता है। यदि आपकी विंशोत्तरी दशाएं केन्द्र और त्रिकोण दोनो स्वामी ग्रहों की चल रही हैं तो आपके ऊपर भगवान विष्णु और लक्ष्मी की कृपा दृष्टि भी होगी।

राजयोग की तरह ही अति महत्वपूर्ण योग है धन योग— यदि आपकी जन्म पत्रिका में दूसरे भाव का स्वामी, नवम् भाव का स्वामी और एकादश भाव का स्वामी ये तीनो आपस में किसी भी प्रकार संबंध स्थापित कर लें तो इसे धन योग कहते हैं। राजयोग की तरह ही इसका भी संबंध जितना अधिक होगा और मजबूत होगा धन योग भी उतना ही अधिक फलदायक और प्रभावशाली होगा। (1) सूर्य से चन्द्रमा यदि केन्द्र (1,4,7,10) में हों तो अल्प धन, यदि पनफर (2,5,8,11) में हों तो मध्यम धन, यदि अपोक्लीम (3,6,9,12) में हों तो अत्यधिक धन की प्राप्ति होती है। (2) यदि जन्म पत्रिका में चन्द्रमा अपने नवांश में हों, दिन का जन्म हो या चन्द्रमा मित्र के नवांश में हो, और वृहस्पति से दृष्ट हो तो भी जातक धनी होता है। (3) रात्रि का जन्म हो, चन्द्रमा अपने नवांश में हो या मित्र के नवांश में हो और शुक्र से दृष्ट हो तो भी जातक धनी होता है।

अरिष्ट योग— इस योग का संबंध सीधा आपके स्वास्थ्य पर पड़ता है, यह एक **अशुभ योग** में गिना जाता है, यदि आपकी जन्म पत्रिका में लग्न, लग्नेश तथा चन्द्रमा का संबंध 6,8 और 12 भावों या उनके स्वामियों के साथ होता है तो यह एक अरिष्ट योग बनता है। **शकट योग**— चन्द्रमा से वृहस्पति 6, 8, या 12 भाव में हो तो शकट योग बनता है। यदि जन्म पत्रिका में चन्द्रमा लग्न से केन्द्र में हो तो शकट योग भंग (रद्द) हो जाता है।

शुभमाला योग— सभी सातों ग्रह माला की तरह 5, 6 और 7वें घर में हों तो शुभमाला योग बनता है। **अशुभमाला योगः**— सभी ग्रह 6, 8 और 12 भावों में हों तो अशुभमाला योग बनता है। **महाभाग्य योगः**— यदि पुरूष का जन्म समय दिन में हो और लग्न, चन्द्रमा और सूर्य तीनों ही विषम राशि के हों तो महाभाग्य योग बनता है और यदि स्त्री का जन्म समय रात का हो साथ ही साथ लग्न, चन्द्रमा और सूर्य तीनों ही सम राशि में हों तो महाभाग्य योग कहा जाएगा। स्त्री हो या पुरूष हो दोनों की ही कुण्डली में यदि लग्नेश, 3,6,8 और 12 भावों के स्वामियों को छोड़कर किसी भी भाव के स्वामी के साथ स्थान परिवर्तन करता है तो इसको भी महाभाग्य योग कहते हैं।

अधम योग– यदि लग्न पत्रिका में सूर्य से केन्द्र में चन्द्रमा हो तो अधम योग बनता है। **गौरी योग**– लग्न से चन्द्रमा केन्द्र या त्रिकोण में अपनी राशि या उच्च राशि के साथ–साथ वृहस्पति से दृष्ट हो तो गौरी योग बनता है। **केदार योग**– यदि आपकी जन्म पत्रिका के सभी सातों ग्रह केवल चार भावों में स्थित हों तो आपकी पत्रिका में केदार योग बनता है। **शकट योग**– यदि सातों ग्रह लग्न और सप्तम भाव के बीच में हों तो शकट योग बनता है। (और यदि वृहस्पति से चन्द्रमा 6,8 और 12 भाव में हो तो भी शकट योग बनता है) **विपरीत राज योग**– 6, 8 और 12 भावों के स्वामी आपस में इन्ही घरों में स्थान परिवर्तन कर लें तो विपरीत राज योग बनता है।

हर्षयोगः– छठे भाव का स्वामी 8वें या 12वें भाव में हो तो हर्षयोग बनता है। **सरल योगः**– अष्टमेश यदि छठे या बारहवें भाव में हो तो सरल योग बनता है। **विमल योगः**– बारहवें भाव का स्वामी छठे या आठवें भाव में हो तो विमल योग बनता है। 6, 8 और 12 भावों के स्वामी यदि नीच, वक्री, अस्त, या शत्रु राशि में हो तो भी विपरीत राज योग का फल देते हैं।

नीच भंग राजयोगः– यदि कोई राजयोग बनाने वाला ग्रह नीच राशि में हो और उसका संबंध किसी शुभ ग्रह के साथ हो जाए तो नीच भंग राजयोग बनता है और तब ये अधिक शुभ फल देता है। **पाप कर्त्री योगः**– किसी भी भाव के दोनों ओर पाप ग्रह हों तो पाप कर्त्री योग बनता है। **शुभ कर्त्री योगः**– किसी भी भाव के दोनों ओर शुभ ग्रह हो तो शुभ कर्त्री योग बनता है। **सुशुभ योगः**– यदि लग्न पत्रिका के दूसरे भाव में शुभ ग्रह हो और उस पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो सुशुभ योग बनता है।

राजयोग भंगः– वृहस्पति नीच का हो और राजयोग बनाने वाले ग्रहों में से भी कोई एक ग्रह नीच का हो और इन दोनों में से एक ग्रह दूसरे भाव और दूसरा ग्रह दशम भाव में हो तो राजयोग भंग समझना चाहिए। राजयोग भंग होने के निम्न कारण हैं। (1) कोई ग्रह उच्च का न होना (2) लग्न या चन्द्रमा, या दोनो पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न होना (3) केन्द्र में कोई ग्रह न होना (4) नीच का सूर्य सभी प्रकार के राजयोगों को भंग कर देता है या उनकी शुभता को कम कर देता है। (5) नीच राशि का ग्रह लग्न में हो और कोई पापी ग्रह दशम में हो तो राजयोग भंग (रद्द) हो जाता है आदि।

नीच भंग योगः– (1) जिस राशि में नीच का ग्रह हो उस राशि का स्वामी या उस राशि में उच्च का होने वाला ग्रह लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो नीच भंग योग बनता है। (2) नीच ग्रह लग्न से या चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो भी नीच भंग हो जाता है।

समयोगः– सूर्य से पणफर स्थान (2, 5, 8, 11) में यदि चन्द्रमा हो तो सम योग बनता है। **वरिष्ट योगः–** यदि आपकी जन्म पत्रिका में सूर्य से 3, 6, 9 और 12 भावों में से किसी एक में चन्द्रमा हो तो आपकी जन्म पत्रिका में वरिष्ट योग है। यह एक शुभ योग है। **वसुमान योगः–** लग्न से उपयच स्थानों (3, 6, 10, 11) में सभी शुभ ग्रह हों तो वसुमान नामक योग बनता है।

आम लोगों का प्रश्न है कि क्या मेरी जन्म पत्रिका में लक्ष्मी योग है या नही ? यदि आपकी जन्म पत्रिका में नवमेश और शुक्र दोनों ही स्वराशि या उच्च के होने के साथ–साथ लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हों तो आपकी जन्म पत्रिका में लक्ष्मी योग बनता है।

कितने ग्रह कितने भावों में बैठे हैं और कौन–कौन से योग बनाते हैं वे सभी योग इस प्रकार हैं। **वल्लकी योग या वीणा योग** यदि सभी सातों ग्रह (राहु और केतु को छोड़कर) अलग–अलग सात भावों में हों, **दाम योग** यदि सभी सातों ग्रह छः भावों में हों, **पाश योग** यदि सभी सातों ग्रह पाँच भावों में हों, **केदार योग** यदि सभी सातों ग्रह चार भावों में हों, **शूलयोग** यदि सभी सातों ग्रह तीन भावों में हों, **युग योग** यदि सभी सातों ग्रह दो भावों में हों, **गोल योग** यदि सभी सातों ग्रह केवल एक ही भाव में हों तो गोल योग बनता है।

भावेश और भाव की अवस्था से बनने वाले 12 योग निम्न प्रकार से हैंः– (1) यदि लग्नेश अस्त न हो, अपने घर का या उच्च का हो और लग्न शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो **चामर योग** बनता है। (2) दूसरे भाव का स्वामी अस्त न हो, अपने घर का या उच्च राशि का हो और दूसरा भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो **धेनु योग** बनता है। (3) यदि तृतीयेश अस्त न हो, अपने घर या उच्च का हो, तीसरा भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो **शौर्य योग** बनता है। (4) चतुर्थेश अस्त न हो, अपनी राशि या उच्च का हो और चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो **जलधि या अम्बुधि योग** बनता है। (5) पंचमेश अस्त न हो, स्वः राशि या उच्च का हो और पंचम भाव शुभ ग्रहों

के प्रभाव में हो तो **छत्र योग** बनता है। (6) छठे भाव का स्वामी ग्रह अस्त न हो, अपनी राशि या उच्च का हो और छठा भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो **अस्त्र योग** बनता है। (7) सप्तमेश अस्त न हो, अपनी राशि या उच्च का हो और सप्तम भाव शुभ ग्रहों से प्रभावित हो तो **काम योग** बनता है। (8) अष्टमेश अस्त न हो, अपने घर का या उच्च राशि का हो और अष्टम भाव पर शुभ ग्रहों का प्रभाव हो तो **आसुर योग** बनता है। (9) नवमेश अस्त न हो, स्वराशि या उच्च का हो और नवम भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो **भाग्य योग** बनता है। (10) दसमेश अस्त न हो, अपनी राशि या उच्च राशि में हो और दसम भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो **ख्याति योग** बनता है। (11) लाभेश अस्त न हो, अपनी राशि का या उच्च राशि का हो और लाभ भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो **सुपारिजात योग** बनता है। (12) बारहवें भाव का स्वामी अस्त न हो, अपनी राशि का हो या उच्च राशि का हो और बारहवें भाव पर शुभ ग्रह हो या दृष्टि रखे तो **मुसल योग** बनता है। **ये सभी 12 योग शुभ योगों में गिने जाते हैं और आपको संबंधित भाव का सुख देते हैं।**

यहाँ पर इस बात पर प्रकाश डालना अनिवार्य है कि जो ग्रह शुभ या अशुभ योग बना रहे हैं वे ग्रह जिन भावों के स्वामी हैं और जिन भावों में बैठे हैं और जिन ग्रहों के साथ बैठे हैं उन्ही की सकारात्मक ऊर्जा या नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाते या घटाते हैं और अनुकूल दशा और गोचर आने पर पूरी तरह से हमें प्रभावित करते हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि योग भंग (रद्द) न हो रहा हो।

इन सभी योगों के अलावा **28 प्रकार के शुभ योग** जो दो ग्रहों के एक दूसरे के घर या भाव में बैठने से बनते हैं जैसे लग्नेश का 2 या 4 या 5 या 7 या 9 या 10 या 11 वें भाव में और इन भावों के स्वामी ग्रह का लग्न में बैठने से सात प्रकार के योग बनते हैं। दूसरे घर के स्वामी का 4 या 5 या 7 या 9 या 10 या 11 वें घर में बैठना और इन भावों के स्वामी का दूसरे घर में बैठने से छः प्रकार के योग बनते हैं। चौथे भाव के स्वामी ग्रह का 5 या 7 या 9 या 10 या 11 वें भाव में बैठना और इनके स्वामी ग्रह का चौथे भाव में बैठने से पाँच प्रकार के योग बनते हैं। पाँचवें भाव के स्वामी का 7 या 9 या 10 या 11 वें भाव मे बैठना और इन भावों के स्वामी का पंचम भाव में बैठने से चार प्रकार के योग बनते हैं। सप्तमेश का 9 या 10 या 11 वें भाव में बैठना और इनके स्वामी का सप्तम भाव में बैठने से तीन प्रकार के योग बनते हैं। नवमेश का 10 या 11 वें भाव

मे बैठना और इनके स्वामी का नवम भाव में बैठने से दो प्रकार के योग बनते हैं। दसमेश का 11वें भाव में और 11वें के स्वामी का दसम भाव में जाकर बैठने से एक योग बनता है। इस प्रकार 7 + 6 + 5 + 4 + 3 + 2 + 1 = 28 योग हुए।

इनके अतिरिक्त 30 अन्य योग हैं **जो हमेशा ही अशुभ फल देते हैं,** वे योग इस प्रकार से हैंः— बारहवें भाव के स्वामी का 1 या 2 या 3 या 4 या 5 या 6 या 7 या 8 या 9 या 10 या 11वें भाव में बैठना और इनके स्वामी का बारहवें भाव में बैठने से 11 प्रकार के योग बनते हैं। आठवें भाव के स्वामी का 1 या 2 या 3 या 4 या 5 या 6 या 7 या 9 या 10 या 11वें भाव में बैठना और इनके स्वामी का अष्टम भाव में बैठने से दस प्रकार के योग बनते हैं। छठे भाव के स्वामी का 1 या 2 या 3 या 4 या 5 या 7 या 9 या 10 या 11वें भाव में बैठना और इनके स्वामी का छठे भाव में बैठने से नौ प्रकार के योग बनते हैं। इस प्रकार यह कुल 11 + 10 + 9 = 30 अशुभ योगों में गिने जाते हैं।

कुछ आठ प्रकार के योग जो **शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के फल देते हैं** वे योग इस प्रकार बनते हैंः— जैसे (1) तीसरे भाव के स्वामी का लग्न में और लग्नेश का तीसरे भाव में बैठना, (2) तीसरे भाव का स्वामी दूसरे भाव में और दूसरे भाव का स्वामी तीसरे भाव में, (3) तीसरे भाव का स्वामी चतुर्थ भाव में और चतुर्थ भाव का स्वामी तीसरे भाव में, (4) तीसरे भाव का स्वामी पंचम में और पंचमेश तीसरे भाव में, (5) तीसरे भाव का स्वामी सप्तम में और सप्तमेश तीसरे में, (6) तीसरे भाव का स्वामी भाग्य स्थान में और भाग्येश तीसरे में, (7) तीसरे भाव का स्वामी दसम में और दसमेश तीसरे भाव में, (8) तीसरे भाव का स्वामी लाभ में और लाभेश तीसरे भाव में। इन 8 प्रकार के योगों को **खल योग** भी कहा जाता है।

इन सभी योगों के अलावा और भी योग हैं जैसे, **संतान योग, विदेश योग, वाहन योग** आदि।

आपके प्रश्न के अनुसार संबंधित योगों पर विस्तार से विचार और कुण्डली का अध्ययन करके आपके प्रश्न का उत्तर दिया जाएगा। अधिकतर पूछे जाने वाले प्रश्न आपकी सुविधा के लिए दिए जा रहे हैं जैस :—

1. **क्या मेरी जन्म पत्रिका में कोई राजयोग है? (Is there any Rajyog in my Horoscope?)**

2. मेरी जन्म पत्रिका में कितने शुभ योग हैं और वे कब फलित होंगे? (**How many Shubh yog in my Horoscope and when they will occur?**)
3. मेरी विदेश यात्रा की दशा कब आएगी? (**When my time will come to go to abroad?**)
4. मेरे लिए अशुभ योगों से बचने का उपाय क्या है? (**What are the remedies for me to prevent from bad yog?**)
5. क्या मेरी जन्म पत्रिका में धन योग है? यदि हाँ तो कब फलित होगा? (**Is Dhan yog in my Horoscope ? If yes than when it will be occur?**)

आदि।